स्वप्नदोष तथा वीर्यपात

बहुत से नवयुवक स्वप्नदोष तथा वीर्यपात से पीड़ित हैं। इस भीषण रोग, वीर्यपात ने उन अनेक प्रतिभाशाली युवकों के हृदय के सारभाग को ही खा डाला है जो अपने शैक्षिक जीवन के प्रारम्भिक चरणों में किसी समय बड़े होनहार छात्र थे। इस भयानक कशाघात ने अनेक छात्रों तथा वयस्क लोगों तक की भी जीवन-शक्ति अथवा सत्त्व को निचोड़ लिया है तथा उन्हें शारीरिक, नैतिक तथा आध्यात्मिक दिवालिया बना दिया है। इस घातक अभिशाप ने बहुत से युवकों के विकास को अवरुद्ध कर दिया है जिससे उन्हें अपने अतीत की अज्ञान-भरी दुष्ट आदतों पर रोना आता है। इस अधम बीमारी ने कितने ही युवकों की आशाओं पर पानी फेर दिया है तथा उन्हें निराश, विषण्ण, नष्ट स्वास्थ्य तथा जर्जरित शरीर-गठन वाला बना दिया है।

मेरे पास यौवन को अपव्यय तथा नष्ट किये जाने की कारुणिक कहानियों के बहुसंख्यक पत्र आते हैं। भारत तथा पश्चिम दोनों के ही ग्राम्य, निकम्मे तथा कामोद्दीपक साहित्य तथा अश्लील चलचित्रों की वृद्धि की दिशा में हाल में झुकाव ने विभ्रान्त युवकों की विपत्ति को और भी बढ़ा दिया है। वीर्य-शक्ति की क्षति उनके मन में महान् भय उत्पन्न करती है। शरीर अशक्त बन जाता है, स्मृति क्षीण हो जाती है, मुख कुरूप हो जाता है तथा नवयुवक लज्जावश अपनी दशा को सुधार नहीं सकता है। किन्तु निराशा का कोई कारण नहीं है। यदि उत्तरवर्ती पृष्ठों में दिये हुए सुझाओं में से कुछ इने-गिने सुझाओं का भी पालन किया जाये तो उसकी जीवन के प्रति यथार्थ दृष्टि विकसित होगी तथा वह अनुशासित आध्यात्मिक जीवन यापन करेगा और अन्त में परमानन्द को प्राप्त करेगा।

दैहिकीय वीर्यपात तथा व्याधिकीय वीर्यपात में भेद

वीर्यपात अनैच्छिक वीर्यस्राव है। शुक्रपात, वीर्यपात, वीर्यस्खलन, स्वप्नदोष, रेतःक्षरण, निषेक—ये सभी पर्यायवाची शब्द हैं। आयुर्वेद के वैद्य इसे शुक्र-मेघ रोग कहते हैं। यह युवावस्था में कुटेवों के कारण होता है। गम्भीर रोग की अवस्था में दिन के समय भी वीर्यपात होता है। रोगी के मूत्रोत्सर्जनकाल में मूत्र के साथ वीर्य का स्राव भी होता है। यदि स्राव यदा-कदा होता है तो आपको किंचित् भी सन्त्रस्त होने की आवश्यकता नहीं है। यह शरीर में ताप अथवा वीर्य की थैलियों पर बोझिल आँतों अथवा मूत्राशय के दबाव के कारण हो सकता है। यह व्याधि नहीं है।

वीर्यपात दो प्रकार का होता है, यथा दैहिकीय वीर्यपात तथा व्याधिकीय वीर्यपात। दैहिकीय वीर्यपात में आपको नयी स्फूर्ति प्राप्त होगी। इस क्रिया से आपको भयभीत नहीं होना चाहिए। यदि वीर्यपात यदा-कदा ही होता है तो आपको उस ओर ध्यान नहीं देना चाहिए। आपको इस विषय में चिन्ता नहीं करनी चाहिए। यह भी तन्त्र का किंचित् प्रधावन अथवा जिस पात्र में वीर्य संचित रहता है उसमें समय-समय पर सामान्य उफान है। इस क्रिया के साथ दुर्विचार नहीं रहता है। व्यक्ति रात्रि में घटित इस क्रिया से अवगत नहीं रहता। इसके विपरीत, व्याधिकीय वीर्यपात के साथ कामुक विचार होते हैं। उसके पश्चात् उदासी आती है। उसमें चिड़चिड़ापन, अवसाद, आलस्य तथा कार्य करने और अनन्यमनस्कता में असमर्थता होती है। यदा-कदा होने वाला वीर्यपात प्रभावहीन होता है, किन्तु बारम्बार होने वाला वीर्यपात उत्साह हीनता, दुर्बलता, अग्निमान्द्य, उदासी, स्मृतिलोप, पृष्ठदेश में दुस्सह पीड़ा, शिरोवेदना, नेत्रों में जलन, निद्रालुता तथा लघुशंका तथा वीर्यस्राव के समय दाह उत्पन्न करता है। वीर्य बहुत पतला हो जाता है।

कारण तथा परिणाम

स्वप्नदोष तथा वीर्यपात के कई कारण हो सकते हैं यथा मलावरोध, बोझिल उदर, उत्तेजक तथा वायुकारक भोजन, अशुद्ध विचार तथा अज्ञानतावश दीर्घकाल तक किया गया हस्तमैथुन।

यदि धातुक्षीणता, वीर्यपात, कामुक स्वप्न तथा नैतिक जीवन के अन्य प्रभावों की उपयुक्त औषधियों द्वारा रोकथाम न की गयी तो ये निश्चय ही व्यक्ति को दुःखद जीवन की ओर ले जायेंगे। परन्तु ये औषधियाँ स्थायी रोगमुक्ति नहीं ला सकती हैं। व्यक्ति जब तक औषधियों का सेवन करता है तब तक उसे अल्पकालिक राहत मिलती है। पाश्चात्य डाक्टर भी यह स्वीकार करते हैं कि ऐसी औषधियाँ स्थायी रोगमुक्ति नहीं दे सकती हैं। ज्यों-ही औषधियों का सेवन बन्द किया कि रोगी अपने रोग को अधिक बदतर दशा में अमुभव करता है। कुछ स्थितियों में, औषधियों के सेवन से रोगी क्लीव बन जाता है। स्थायी सफल रोगमुक्ति तो एकमात्र प्राचीन योग-प्रणाली से ही हो सकती है। **"नास्ति योगात्परं बलम्"**—योग से बढ़ कर कोई बल नहीं है। इस पुस्तक में दी हुई विधियों का यदि आप नियमित रूप से अभ्यास करेंगे तो वे आपको सफलता प्राप्त करने में समर्थ बनायेंगी।

कठवैद्यों तथा कूट चिकित्सकों के शानदार विज्ञापनों से अत्यधिक प्रभावित न हों। सरल प्राकृतिक जीवन यापन करें। आप शीघ्र ही पूर्ण स्वस्थ हो जायेंगे। आप इन तथाकथित एकस्वकृत औषधियों तथा अमोघगुण-औषधियों को क्रय करने में धन व्यय न करें। वे निरर्थक हैं। कठवैद्य विश्वासशील तथा अज्ञानी लोगों का शोषण करने का प्रयास करते हैं। डाक्टरों के पास न जाइए। अपना डाक्टर स्वयं बनने की योग्यता प्राप्त करने का प्रयास कीजिए। प्राकृतिक नियमों, स्वास्थ्य-विज्ञान तथा आरोग्य के सिद्धान्तों को जानिए। स्वास्थ्य के नियमों का उल्लंघन न कीजिए।